नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

भारत और चीन ; संतुलन का नया अध्याय

तियानजिन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग की मुलाकात ने एशिया की राजनीति में एक नई हलचल पैदा कर दी है. करीब 50 मिनट तक चली यह बातचीत, जो निर्धारित समय से कहीं अधिक लंबी थी, इस बात का संकेत है कि दोनों देश पुराने विवादों की धुंध को पीछे छोड़कर भविष्य की दिशा में देखना चाहते हैं.यह केवल औपचारिक मुलाकात नहीं थी, बल्कि एक गहरे कूटनीतिक संदेश से भरी हुई घटना थी. सात वर्षों बाद प्रधानमंत्री मोदी की चीन यात्रा और इस दौरान निर्मित सकारात्मक माहौल बताता है कि हाथी और ड्रैगन अब टकराव से ज्यादा सहयोग की जमीन तलाश रहे हैं.

दरअसल, सच यह है कि 2020 की गलवान घाटी की झड़पों ने भारत-चीन संबंधों को गहरे संकट में डाल दिया था. सीमा विवाद, विश्वास की कमी और चीन का आक्रामक रुख इन रिश्तों पर भारी पड़ता रहा. इसके साथ ही चीन से भारत का बढ़ता व्यापार घाटा लगातार चिंता का विषय बना. किंतु तियानजिन की बैठक ने यह दिखा दिया कि दोनों ही देश अब समझ चुके हैं कि टकराव किसी के हित में नहीं है. शी जिनपिंग का यह कहना कि हाथी और ड्रैगन को अच्छे पड़ोसी बनना होगा इस मानसिकता में बदलाव का संकेत है.इस बदलते परिदृश्य का एक और बड़ा कारण है अमेरिका. डोनाल्ड ट्रंप के राष्ट्रपति काल से ही अमेरिका ने चीन पर आर्थिक-रणनीतिक दबाव बढ़ाया. टैरिफ युद्ध, टेक कंपनियों पर रोक और इंडो-पैसिफिक में सैन्य गठजोड़ का विस्तार—इन कदमों ने बीजिंग को मजबूर किया कि वह अपनी नीति में लचीलापन लाए.

दूसरी ओर, भारत पर भी दबाव बना कि वह हर मोर्चे पर वाशिंगटन के साथ खड़ा रहे. यह स्थिति भारत की रणनीतिक स्वायत्तता के लिए चुनौतीपूर्ण थी. यही कारण है कि नई दिल्ली और बीजिंग दोनों ही अब यह महसूस करने लगे हैं कि अमेरिकी दबाव से बचने और अपनी स्वतंत्र कूटनीति बनाए रखने के लिए आपसी संवाद आवश्यक है. तियानजिन की बैठक इसी सामरिक संतुलन की तलाश का हिस्सा है.

प्रधानमंत्री मोदी की हाल की जापान यात्रा को भी इस संदर्भ में देखना होगा. टोक्यो में मोदी ने एशियाई लोकतांत्रिक सहयोग पर जोर दिया और जापान के साथ मिलकर एशिया की नई आर्थिक-सुरक्षा धुरी पर काम करने का संकल्प जताया. यह संदेश साफ था कि भारत अपनी एशिया नीति को केवल चीन पर आधारित नहीं करेगा. जापान और भारत की नजदीकी चीन को असहज करती है, लेकिन ठीक इसी समय चीन से संवाद की पहल यह दिखाती है कि भारत दो ध्रुवों पर चलने की कला में माहिर हो चुका है.

एक ओर अमेरिका-जापान के साथ रणनीतिक गठबंधन, तो दूसरी ओर चीन और रूस के साथ संतुलन—यही भारत की मल्टी-अलाइनमेंट नीति है. बहरहाल, तियानजिन की बैठक को केवल बीते विवादों से आगे बढ़ने की कोशिश नहीं, बल्कि एशिया के भविष्य का संकेत मानना चाहिए. हाथी और ड्रैगन अगर साथ चलते हैं तो न केवल सीमा पर शांति आएगी, बल्कि अमेरिका और यूरोप को भी यह संदेश जाएगा कि एशिया अपनी दिशा खुद तय कर सकता है. प्रधानमंत्री मोदी की कूटनीति की सबसे बड़ी ताकत यही है कि वे एक साथ कई ध्रुवों पर खेलना जानते हैं. वे जापान में लोकतांत्रिक एशिया की बात करते हैं और चीन में सहयोग की भाषा. यही संतुलन भारत को न केवल एशिया, बल्कि वैश्विक राजनीति में निर्णायक शक्ति बना रहा है.

कुल मिलाकर तियानजिन का संवाद हाथी और ड्रैगन की नजदीकी का आरंभ है. यदि यह भरोसे की नई इमारत खड़ी कर पाया, तो एशिया में शक्ति संतुलन का एक नया अध्याय लिखा जाएगा.भारत के लिए यह कूटनीति केवल एक पड़ोसी से रिश्तों का सवाल नहीं, बल्कि आने वाले दशकों में वैश्विक नेतृत्व का मार्ग प्रशस्त करने वाली पहल है.

पोषण भी पढ़ाई भी

भारत के भविष्य के लिए खेल आधारित शिक्षा

श्रीमती अन्नपूर्णा देवी
केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री, भारत सरकार

> मंत्रालय ने इस परिवर्तन को दिशा देने के लिए 3-6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यक्रम .आधारशिलाए की शुरुआत की है. आधारशिला बच्चों के केवल बौद्धिक विकास पर ही नहींए बल्कि भावनात्मकए शारीरिक और सामाजिक कल्याण पर भी ज़ोर देते हुए समग्र विकास पर केंद्रित है. यह खेल के माध्यम से सीखने की व्यपवस्थित प्रक्रिया को आगे बढ़ाता हैए जिससे बच्चों को सहयोगपूर्ण वातावरण में बढ़ने और फलने .फूलने का अवसर मिलता है .बच्चे खेलने के प्रति सहज रूप से आकर्षित होते हैं .अपनी दुनिया के कोने .कोने को खोज और आनंद के स्थान में तब्दीअल कर देते हैं. सही वातावरण के साथ यह प्रवृत्ति आजीवन सीखने की नींव बन जाती है. पोषण भी पढाई भी सुरक्षितए व्यनवस्थित और प्रेरक वातावरण प्रदान करके इस भावना को पोषित करती है जहाँ बच्चे निर्देशित खेल और शिक्षा के माध्यम से फल-फूल सकते हैं.

यदि हमें विकसित भारत का निर्माण करना है, तो हमें शुरुआत अपने सबसे छोटे नागरिकों की क्षमता के विकास से करनी होगी, जहाँ से जीवन का आगाज़ होता है. आंगनवाड़ी केंद्र में बच्चों की खिलखिलाती हँसी में, उनके द्वारा गायी जाने वाली कविताओं में और उनके द्वारा बनाए जाने वाले ब्लॉक में हमारे राष्ट्र के भविष्य का सामर्थ्य आकार लेता है. प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में, भारत ने अपने सबसे छोटे नागरिकों को अपनी विकास यात्रा के केंद्र में रखा है. प्रधानमंत्री ने न केवल विश्वविद्यालयों और डिजिटल बुनियादी ढाँचे में निवेश करके अपितु बच्चे के जीवन की पहली कक्षा आंगनवाड़ी के अतिशय महत्व को पहचानते हुए हमारी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं को नए सिरे से परिभाषित किया है.

आज के भारत में, खेल अब सिर्फ़ मनोरंजन भर नहीं, अपितु नीति है. और इसके परिणाम बिल्कुल स्पष्ट और विश्वसनीय हैं. पिछले एक दशक में, मोदी सरकार ने प्रारंभिक बाल्याभवस्थाप के विकास के प्रति अपने दृष्टिकोण को मूलभूत रूप से पुनर्परिभाषित किया है. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 निर्णायक मोड़ साबित हुई, जिसमें यह स्वीकार किया गया कि मस्तिष्क का 85 प्रतिशत विकास छह साल की उम्र से पहले ही हो जाता है. यदि हम स्मार्ट, स्वस्थ और अधिक उपयोगी आबादी चाहते हैं, तो हमें वहाँ निवेश करना होगा जहाँ इसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत है जीवन के शुरुआती छह वर्षों में.

वैज्ञानिक प्रमाण इस बदलाव का समर्थन करते हैं. सीएमसी वेल्लोर के क्लिनिकल महामारी विज्ञान विभाग द्वारा किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि जिन बच्चों को 18 से 24 महीने तक व्यवस्थित प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) मिली, उनके आईक्यू में पाँच साल की उम्र तक 19 अंक तक, और नौ साल की उम्र तक तो 5 से 9 अंक तक की उल्लेखनीय और स्थायी वृद्धि देखी गई. विकासशील भारत के लिए ये वृद्धि बेहद महत्वपूर्ण है.

भारत के ये निष्कर्ष वैश्विक शोध के अनुरूप हैं. अंतर्राष्ट्रीय अध्ययनों से पता चलता है कि पाँच साल की उम्र से पहले गुणवत्तापूर्ण ईसीसीई कार्यक्रमों में भाग लेने वाले बच्चों में उच्च आईक्यूए बेहतर सामाजिक कौशल और बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन की संभावना 67 प्रतिशत अधिक होती है. जैसा कि नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ. जेम्स हेकमैन की प्रसिद्ध उक्ति है, ष्जितनी जल्दी शुरुआत, उतने बेहतर परिणाम और उतने ही कुशल रिटर्न उनके शोध में अनुमान व्यक्त किया गया है कि प्रारंभिक बाल्यावस्था में निवेश से 13.18 प्रतिशत तक रिटर्न मिलता है जो शिक्षा या नौकरी के प्रशिक्षण के किसी भी अन्य चरण से अधिक है.

ईसीसीई के आर्थिक और सामाजिक दोनों ही प्रकार के महत्व को समझते हुए महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने पोषण भी पढ़ाई भी नामक एक पहल शुरू की है, जिसने आंगनवाड़ी केंद्रों को जीवंत प्रारंभिक शिक्षा केंद्रों में तब्दीएल कर दिया है. आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को पहली बार स्थानीय और स्वदेशी सामग्रियों का उपयोग कर गतिविधि-आधारित और खेल-उन्मुख दृष्टिकोणों पर ध्यान केंद्रित करते हुए व्यवस्थित रूप से ईसीसीई में प्रशिक्षित किया जा रहा है. शिक्षण.अधिगम सामग्री के लिए बजट आवंटन में भी पर्याप्त वृद्धि की गई हैए, और मासिक ईसीसीई दिवसों को संस्थागत रूप दिया गया है. आजए आंगनवाड़ी केंद्र केवल पोषण का स्थान नहीं है यह प्रत्येक बच्चे की पहली पाठशाला है, जो जीवन के सबसे महत्वपूर्ण वर्षों में जिज्ञासा, रचनात्मकता और समग्र विकास का पोषण करती है.

व्यवस्थित और निर्बाध खेल के प्रति यह संतुलित दृष्टिकोण अत्यंत महत्वपूर्ण है, खासकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के आलोक में, जिसने औपचारिक स्कूल प्रवेश की आयु को छह वर्ष कर दिया है. व्यसवस्थित ईसीसीई यह सुनिश्चित करती है कि बच्चे भावनात्मक, सामाजिक और संज्ञानात्मक रूप से स्कूल के लिए तैयार हों. देश भर के अभिभावकों का बढ़ता विश्वास वास्तव में उत्साहजनक है. जो परिवार पहले कभी आंगनवाड़ियों को केवल पोषण केंद्र मानते थे, अब उन्हें अपने बच्चे की शिक्षा की यात्रा में पहला कदम मानते हैं.

विंध्य की डायरी

अन्नदाता खाद के लिये कतार में, कांग्रेस की अपनी खामोशी

डॉ. रवि तिवारी

अपनी मेहनत और पसीना बहाकर अन्न पैदा करने वाला अन्नदाता इस समय एक बोरी खाद के लिये कतार पर खड़ा है. किसान की महिलाएं भी खाद पाने की लालसा में धूप में पल्लू ढक कर लाइन में लगी है. नेताओं को शायद यह दिखाई नही दे रहा और विपक्ष में बैठी कांग्रेस की अपनी खामोशी है. भाजपा सरकार खेती को लाभ का धंधा और किसानो की आय दोगुनी करने की बात करती है, खाद के लिये किसान पसीना बहा रहा है. विंध्य में जनता का प्रतिनिधित्व करने वाले नेताओं को किसानो की पीड़ा दिखाई नही दे रही है.

दरअसल उनके आंखो में सत्ता की पट्टी बंधी है पर विपक्ष में बैठी कांग्रेस के स्थानीय नेता भी खामोश है. उनकी खामोशी की वजह क्या है यह तो वही जाने, समूचे विंध्य में खाद को लेकर हाहाकार मचा है. स्थानीय मुद्दा जैसे खाद, बिजली को लेकर किसान के साथ खड़ा होना चाहिये पर ऐसा नही है केवल कांग्रेसी नेताओं को राष्ट्रीय-प्रदेश स्तरीय मुद्दो को लेकर ही सडक़ पर उतरना आता है. न्याय सत्याग्रह, वोट चोरी को लेकर कांग्रेसी राग अलाप रहे है पर सडक़ पर अन्नदाता खाद के लिये जूझ रहा है उनके साथ खड़े होने की हिम्मत नही कर रहे है . मंच से किसानो के लिये बड़ी-बड़ी बात कर दुहाई देने वाले स्थानीय नेताओं को किसानो की पीड़ा दिखाई नही दे रही है. कांग्रेस नेताओं को चाहिये कि वह अपने किसानो के साथ उनके हक की लडाई के लिये खड़े हो. क्या केवल सत्ता परिवर्तन और वोट मांगने के लिये ही किसानो के पास जाते रहेगे... ???

शहर अध्यक्ष के विरोध में खेमेबाजी

कांग्रेस के संगठन सृजन अभियान के मंथन से निकले शहर अध्यक्ष को लेकर अंदर ही अंदर बगावत और खेमेबाजी अंकुरित हो रही है. सबसे ज्यादा विरोध सिंगरौली शहर अध्यक्ष को लेकर है. ब्राम्हण और पिछड़ा वर्ग यहा लामबंद हो रहा है. प्रमुख दावेदारो को दरकिनार कर कांग्रेस के एक वरिष्ठ नेता के चहेते को अध्यक्ष का ताज पहनाकर गुटबाजी को हवा दे दी गई. वरिष्ठ नेता के एक घोर समर्थक या कहे अंधभक्त उम्मीद लगाकर बैठे थे कि अध्यक्ष का ताज उनके सर होगा पर घोषणा के बाद झटका लगा और अब वही खेमेबंदी में लग गये है. साथ ही कांग्रेस के पूर्व मंत्री के खेमे में पाला बदल कर पहुंच गये है. विरोध का जो ज्वालामुखी दहक रहा है उसके अगुवा भी यही नेताजी है. कांग्रेस ऊर्जाधानी में मजबूत होने के बजाय अब गुटबाजी में उलझती जा रही है.

अजय सिंह राहुल की चिंता

प्रदेश में इस समय विद्युत चोरी रोकने के लिये स्मार्ट मीटर लगाए जा रहे है और मीटर लगाने का काम सउदी अरब की कम्पनी कर रही है . कम्पनी के निदेशक इंजी . पाकिस्तानी मूल के बताए जा रहे है . ऐसे में ठेके के बहाने नागरिको का डाटा एकत्र कर उसका दुरूपयोग होने की संभावना से इनकार नही किया जा सकता . क्या यह चिंता का विषय है? पूर्व नेता प्रतिपक्ष एवं चिरहुट विधायक अजय सिंह राहुल ने राष्ट्रीय सुरक्षा को लेकर चिंता जताते हुए कहा कि कम्पनी में पाकिस्तानी अधिकारी पदस्थ है और इनकी पहुंच हमारे उपभोक्ताओं के डाटा तक होना क्या राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये जोखिम नही है? राष्ट्र की चिंता करते हुए उन्होने प्रदेश सरकार से कम्पनी की कार्य प्रणाली की सघन जांच कर ठेका निरस्त करने की मांग उठाई है . कही न कही अजय सिंह की चिंता पर सरकार को गंभीरता से विचार करना चाहिये .

ट्यूशन के मकड़जाल में फंसे 11वीं-12वीं के छात्र

सांख्यिकी व कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय ने शिक्षा संबंधी व्यापक सर्वे प्रकाशित किया है जिसके अनुसार देश में 11वीं और 12वीं के 44.6 प्रतिशत शहरी छात्र प्राइवेट ट्यूशन ले रहे हैं जबकि ग्रामीण क्षेत्र के निजी ट्यूशन लेनेवाले विद्यार्थियों की तादाद 33.1 प्रतिशत है. कुल मिलाकर इस वर्ष प्राइवेट ट्यूशन में दाखिल छात्र 37 फीसदी हैं. परीक्षा की बेहतर तैयारी तथा अधिक अंक पाने की आकांक्षा इसके पीछे है. मुद्दा यह है कि क्या स्कूल और जूनियर कॉलेज में ठीक से पढ़ाई नहीं होती जिस कारण छात्रों को कोचिंग क्लास या ट्यूशन के लिए बाध्य होना पड़ता है? दूसरी ओर ट्यूशन का इसलिए पक्ष लिया जाता है कि उसमें संदेह का निराकरण होता है तथा विषय की अवधारणा स्पष्ट की जाती है. यह छात्रों के लिए पूरक शैक्षणिक व्यवस्था है जो तैयारी में मदद देती है. यह तर्क अपनी जगह है लेकिन सभी ओर व्यावसायिक कोचिंग केंद्रों ने स्कूलों पर ग्रहण लगा दिया है. प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं तथा शैक्षणिक अवसरों के लिए छात्र कोचिंग पर अवलंबित रहने लगे हैं. प्रश्न उठता है कि क्या ट्यूशन व कोचिंग क्लास का पनपना राष्ट्रीय शिक्षा नीति2000 के लक्ष्य में बाधक है? यह नीति नवोन्मेष व ग्रहणशीलता को बढ़ावा देने का उद्देश्य रखती है। ट्यूशन व कोचिंग क्लास से पालकों पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ भी आता है. सर्वे के मुताबिक शहरी क्षेत्र में कोचिंग पर प्रतिवर्ष 9,950 रुपए तथा ग्रामीण क्षेत्र में 4548 रुपए खर्च आता है. वास्तविकता में यह रकम इससे ज्यादा भी हो सकती है. अनेक परिवारों की आय का बड़ा हिस्सा कोचिंग शुल्क में खर्च हो जाता है. जो छात्र आर्थिक कारणों से निजी ट्यूशन नहीं लगा पाते वह पिछड़ जाते हैं. स्कूली शिक्षा के अंतिम वर्ष छात्र के जीवन को आकार देनेवाले होते हैं. घंटों पढ़ाई करने और बार-बार टेस्ट क्लीयर करने का दबाव छात्र पर बना रहता है. कोटा में होनेवाली छात्र आत्महत्या शिक्षा प्रणाली से आनेवाले तनाव को दर्शाती हैं.

कोचिंग संस्थाओं के नियमन के लिए केंद्र सरकार ने 2024 में गाइडलाइन जारी की थी. उच्च शिक्षा में सीटें बढ़ाने के अलावा पाठ्यक्रम को व्यवस्थित किया जाए तो ट्यूशन अनिवार्य न होकर ऐच्छिक रह जाएगी.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

कार्यकर्ता भी ऊंचा पद चाहता मन में नेता बनने की लालसा

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, हमारी इच्छा नेता बनने की है. इसके लिए कुर्ता, चूड़ीदार पैजामा और मोदी जैकेट का इंतजाम हमने कर लिया. पर्सनालिटी डेवलपमेंट और पब्लिक स्पीकिंग की क्लास भी लगा ली है.

हमने कहा, इस खटपट में क्यों पड़ते हैं? आपके पीछे परिवार की जिम्मेदारी है. नेतागिरी करने जाएंगे तो घर के रहेंगे न घाट के! कोई एकदम से नेता नहीं बनता. पहले जमीन से जुड़े सच्चे कार्यकर्ता बनकर पसीना बहाइए. एक दर्जन लोगों का ग्रुप बनाकर किसी नेता के अगल-बगल घूमिए. अपनी सोशल एक्टिविटी की खबरें अखबार में छपवाइए. इस तरह एक-एक सीढ़ी चढ़िए. मोर्चे में शामिल होकर नारे लगाने, पोस्टर चिपकाने, धरना देने की अप्रेंटिसशिप करते रहिए. मंच पर दरी बिछाने, कुर्सी लगाने, सजावट करने की साधना करते रहित. उम्मीद रखिए कि कभी आपके मुंह में अंगूर आ टपकेगा.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, ऐसा करते-करते 10-20 साल व्यर्थ ही गुजर जाएंगे. हमें नेतागिरी का शॉर्टकट बताइए. ऐसा रास्ता बताइए कि हींग लगे ना फिटकरी लेकिन रंग चोखा आए! क्या हम किसी नेता को अपना गॉडफादर बनाएं और आंख मूंदकर उसी के गुण गाएं?

हमने कहा, नेतागिरी चमकाने के लिए वादे जरूरी होते हैं. मदारी भी सांप-नेवले की लड़ाई दिखाने के वादे पर मजमा जुटाता है लेकिन उसके पिटारे और झोले से ये दोनों प्राणी कभी बाहर नहीं निकलते. फिर भी उसकी बातों में उलझकर लोग पैसा बरसाते हैं. नेताओं को बड़ा मदारी समझ लीजिए. उनके वादे जुमले बनकर रह जाते हैं. नेता मीठी बातें करनेवाला महाठग होता है. कोई नहीं जान पाता कि उसके दिल में क्या है और जुबान पर क्या!

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, राजनीति की शतरंज पर चाल चलना है तो नेता को चालबाज बनना ही पड़ता है. करोड़ों की दौलत जुटाने पर भी खुद को सादगी पसंद जनसेवक बतानेवाले नेताओं की कमी नहीं है. बिजनेस में घाटा आ सकता है लेकिन नेतागिरी हमेशा फायदे का सौदा है. बड़े उद्योगपतियों, ठेकेदारों, इंजीनियरों को अपनी मुट्ठी में रखो. कमीशन की दौलत की बारिश में मजे से शावर बाथ लो और आजीवन पॉवर में बने रहने के हथकंडे अपनाओ. आज के जमाने में नेता की यही पहचान बन कर रह गई है. वह जनता के प्रति भक्तिभाव का दिखावा करनेवाला बगुला भगत बनकर रह गया है.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12008 - डॉ. सागर खादीवाला

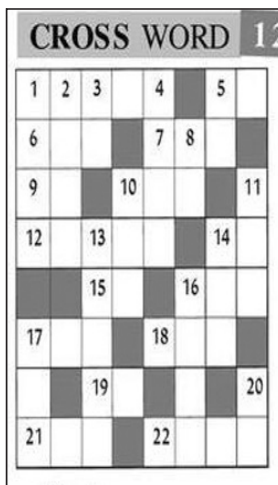

बाएं से दाएं
1. किसी की बुराई करने वाला, अपकार करने वाला (सं) 5. गुस्सा, क्रोध, चिढ़ (सं) 6. वरण करना, नहीं तो 7. सवारी के घोड़े की काठी के नीचे पैर रखने का पावदान (उर्दू) 9. जिसमें पूरे के अतिरिक्त चौथाई और जुड़ा हो 10. मानने योग्य, मत, विचार (सं.) 12. कृपालू (उर्दू) 14. हंसी, दिल्लगी, उपहास 15. गले में पहनने की माला 16. लंबोतरे आकार का पत्थर या लोहे का भारी गोल खंड जिससे कोई स्थान समतल करते या कंकर आदि कूटकर सड़कें बनाते हैं, काठ का गोल दस्ता जिससे रोटी आदि बेली जाती है 17. सुगंध, गाय (सं.) 18. घायल, जख्मी 19.वह जो युद्ध करता हो, युद्ध में लड़ने वाला सिपाही 21. एक प्रकार का मृग, बाज, मयूर 22. पूरी तरह से भरा हुआ, पूर्ण रूप से

ऊपर से नीचे
1. मौका, सुयोग 2. चिंता, फिक्र (उर्दू) 3. एक आंख का 4. हथेली (सं.) 5. दबदबा, शक्तिशाली होने या बड़प्पन की धाक, प्रभाव 8. कविता 10. देवालय, वास, स्थान 11. वस्त्र, कपड़ा (सं.) 13. वह बड़ा अभियोग जो उच्च अधिकारियों (राष्ट्रपति आदि) पर कोई हानिकारक कार्य करने पर लगाया जाता है 14. दशा, स्थिति 16. अपेक्षाकृत ठीक या अच्छा (उर्दू) 17. एक अप्सरा, एक प्रसिद्ध नागमाता, दुर्गा 20. चोरी करने वाला

Solution 12007

त	ह	स	न	ह	स		उ
ला		मा		वा	र	दा	त
श	ब	न	म		क	ता	र
	क	ता	ई		ना		न
का	ना			दु		भ	
र		व्या	या	म		ग	त
खा	न	पा	न		ज	वा	ब
ना	ग	र		ग	ब	न	

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में व्यर्थ के वाद विवाद से मन खिन्न रहेगा, भोग विलास में धन व्यय होगा, यात्रा में कष्ट होगा, स्वास्थ्य गड़बड़ रहेगा,वर्ष के मध्य में विदेशी व्यापारियों के लिये समय लाभप्रद रहेगा, सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, वर्ष के अन्त में मित्रों के सहयोग से योजनाओं का समाधान होगा, राजनैतिक रूपरेखा बनेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों के लिये सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों की मित्रों के सहयोग से नवीन योजनाओं की रूपरेखा बनेगी, कर्क राशि के व्यक्तियों की यात्रा में कष्ट होगा, मकर और कुंभ राशिके व्यक्तियों को यश मिलेगा,मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को मेहनत अधिक करना होगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को संयम सेकाम लेना हितकर रहेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को साहस पराक्रम बढ़ेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक लंबे कद का परिश्रमी, साहसी, विनम्र तथा निडर, होगा. जातक भाग्यशाली होगा. माता पिता भाई बहिनों आदि का ख्याल रखने वाला होगा. साथ ही मामा नाना के अलावा पूरे परिवार का ध्यान रखेगा, न्यायप्रिय होगा. स्वतंत्र कार्य द्वारा जीवन यापन करेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

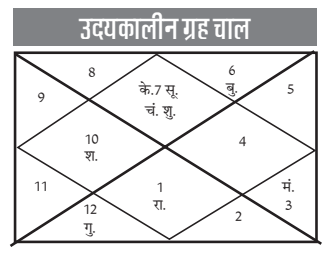

पंचांग

रा.मि. 10 संवत् 2082 भाद्रपद शुक्ल नवमीं चन्द्रवासरे रात 11/34, ज्येष्ठा नक्षत्रे शाम 6/17, विष्कुम्भ योगे दिन 4/6, बालव करणे सू.उ. 5/44 सू.अ. 6/16, चन्द्रचार वृश्चिक शाम 6/17 से धनु, शु.रा. 8, 10,11,2,3,6 अ.रा. 9,12,1,4,5,7 शुभांक- 0,3,7.

व्यापार भविष्य

भाद्रपद शुक्ल नवमीं को ज्येष्ठा नक्षत्र के प्रभाव से गेहूँ जौ, चना, मूँग, बाजरा, ज्वार, आदि में मंदी होगी. जीरा, धनियां, सौंप, में तेजी रहेगी. रूई, कपास, सरसों, के भाव में तेजी रहेगी. भाग्यांक 4632 है.

मेष- आर्थिक प्रयास सफल होंगे. स्त्री जाति की चिन्ता रहेगी. मन में विशेष प्रसन्नता का अनुभव होगा. जोखिम के कार्यों से दूर रहें.

वृषभ- इच्छित योजना के लिये कार्य योजना में बदलाव संभव है. मनोरंजन आदि के अवसरों लाभ होगा. यश, मान सम्मान प्राप्त होगा. धैर्य से काम लें.

मिथुन- व्यय की अधिकता से मन असंतुष्ट रहेगा. परिश्रम अधिक करना होगा. समय के स्वरूप को देखकर कार्य करना हितकर रहेगा. मित्र मिलन होगा.

कर्क- अचानक धन लाभ, कार्य क्षेत्र का विस्तार होगा. दैनिक कार्य में लगन व आस्था रहेगी. जीवनसाथी के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी.

सिंह- उच्चाधिकारियों का सहयोग समय पर मिलने का योग है. राजकीय मामलों में पक्ष मजबूत होगा. मानसिक सुखं शांति की प्राप्ति होगी. श्रम अधिक होगा.

कन्या- खानपान पर नियंत्रण रखकर कार्य करें. उच्च अध्ययन में सफ्लता मिलेगी. मानसिक संतोष बना रहेगा. वैवाहिक चर्चाओं में सफ्लता.

तुला- चिन्ता का निवारण होगा. पारिवारिक आयोजन सुखद रहेगा. संतान तथा रोगी की चिन्ता रहेगी. कारोबारी यात्रा आदि का योग प्रबल है.

वृश्चिक- वाणी पर संयम रखें. लाभदायक अवसरों की प्राप्ति होगी. अधिक साहस व जल्दबाजी से काम बिगड़ सकता है. पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी.

धनु- मित्रता उपयोगी रहेगी. व्यवसायिक कामकाज की रूपरेखा करेगी. निजी दायित्वों की पूर्ति होगी. परिश्रम होगा. पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी.

मकर- स्वास्थ्य अच्छा रहेगा. अतिथि आगमन होगा. आपसी सामंजस्य बना रहेगा. कार्य की रूपरेखा बनेगी. विवादों से बचना हितकर रहेगा.

कुम्भ- वाहन सुख प्राप्त होगा. खानपान पर संयम रखें. मतभेद दूर होने से रिश्ते मजबूत होंगे, कामकाज की रूपरेखा बनेगी. धार्मिक कामकाज बनेगा.

मीन- परिश्रम अधिक करना होगा. शत्रु बाधायें दूर होंगी. जिद में आकर गलत फैसला ले सकते हैं.मानसिक संतोष बना रहेगा. रूखे व्यवहार से मित्र नाराज होंगे.

SUDOKU 7140

3				8				9
		8	6		9	5		
6	5			4			7	1
	4						2	
1	2			6			9	8
		6	4		5	8		
9				1				7

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7139

8	2	4	3	9	7	5	1	6
3	5	6	1	4	2	7	8	9
1	9	7	6	5	8	2	3	4
9	6	2	5	8	3	1	4	7
5	3	1	4	7	9	8	6	2
4	7	8	2	1	6	9	5	3
2	8	3	9	6	1	4	7	5
6	1	5	7	2	4	3	9	8
7	4	9	8	3	5	6	2	1